Asian Mirror - Volume VIII, Issue IV, 30 December-2021
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 21 October 2021
DOI - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

© Dr. Rajesh Kumar Sethia, Deepak Kumar Sethiya

4 Hindi literary journalism and Shaani (Hindi ki sahityik patrakarita and Shanni)

**** Dr. Rajesh Kumar Sethiya[1], Deepak Kumar Sethiya[2]***

[1]Assistant Professor, Hindi Government Naveen College, Tokapal, District-Bastar, Chhattisgarh

[2]Teacher (LB), Pulcha, District-Bastar, Chhattisgarh

**email: rajeshsethiya77@gmail.com*

Abstract

Gulsher Khan Shaani, is a famous and well-known writer of the country; was one of the famous storytellers in the Hindi literary world. In his fictional universe, there are numerous novels and short stories. Shani had an innate editorial talent and was inclined towards it. His keen interest in literary journalism is reflected from the very beginning. When he was a student of Bastar High School in 1951, spontaneously and without any inspiration, he edited and published the handwritten magazine 'Gyandeep' at the school level. On its own, that handwritten Gyandeep was a readable magazine of 80 pages. Shani is one such fiction writer who has influenced his contemporary subject background with his writings. He has introduced new stylistic beliefs in his novel, using contemporary stylistic influences that are distinctive in their own right from the point of view of style. Shani has used a good style to express his feelings and thoughts. His novels express their inner pain and anguish more than the characters of literature speak. The style elements of Shani's novel literature overwhelm the readers with the touch of his writings.

Key Words: *Gulsher Khan Shaani, Hindi, Storytellers, Hindi literary world*

Citation: डॉ. राजेश कुमार सेठिया, दीपक कुमार सेठिया (2021). "हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता और शानी", **Asian Mirror**– December 2021, 8(4):33-40. doi - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

Asian Mirror - Volume VIII, Issue IV, 30 December-2021
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 21 October 2021
DOI - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

© डॉ. राजेश कुमार सेठियाए दीपक कुमार सेठिया

4 "हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता और शानी"

*डॉ. राजेश कुमार सेठिया[1], दीपक कुमार सेठिया[2]

[1]सहायक प्राध्यापक, हिन्दी शासकीय नवीन महाविद्यालय,
तोकापाल, जिला–बस्तर छ.ग.

[2]शिक्षक (एल बी), पुलचा, जिला–बस्तर, छ.ग.

*email: rajeshsethiya77@gmail.com

गुलशेर खां शानी हिंदी साहित्य जगत में एक श्रेष्ठ कथाकार के रूप में स्थापित हैं। अनेक उपन्यासों तथा कहानियों से उनका रचना संसार दीप्त है। इसके साथ ही वे एक कुशल संपादक भी रहे है। संपादक की कुशलता सूझ–बुझ उनमें थी। शानी के जीवन का उतरार्द्ध (लगभग अंतिम बीस वर्ष) संपादकीय कर्म को समर्पित रहा है। शानी में जन्मजात सम्पादकीय प्रतिभा थी, इस ओर रुझान था। साहित्यिक पत्रकारिता में उनकी गहरी अभिरुचि प्रारंभ से ही परिलक्षित होती है। बिना किसी की प्रेरणा से स्वतः स्फूर्त सन् 1951 ई. में जब वह बस्तर हाईस्कूल के विद्यार्थी थे, तब उन्होने हस्तलिखित पत्रिका 'ज्ञानदीप' का शालेय स्तर पर संपादन एवं प्रकाशन किया था। स्वयं अपने बूते पर वह हस्तलिखित 'ज्ञानदीप' 80 पृष्ठों की एक पठनीय पत्रिका थी।

स्थानीय कलाकार देवेन्द्र ठाकुर की तुलिका ने उसमें अपना रंग भर दिया था। उसमें (ज्ञानदीप में) स्कूल के विद्यार्थियों के अतिरिक्त शहर के प्रतिष्ठित कवियों तथा लेखकों – लक्ष्मी चन्द जैन, कमालुद्दीन कमाल, बसंत लाल डा. शिवसेवक त्रिवेदी आदि की रचनाएँ शामिल थी। इस शालेय पत्रिका के प्रकाशन से स्थानीय गर्ल्स हाई स्कूल को भी प्रेरणा मिली तथा वहॉ से भी पत्रिका का प्रकाशन शुरु किया गया था। यह बस्तर हाईस्कूल के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना थी।[1]

'ज्ञानदीप' के बाद शानी ने सन् 1956 ई. में जगदलपुर से 'पायल' नाम साहित्यक पत्रिका का प्रकाशन किया था।[2] आर्थिक सहयोग न मिल पाने के कारण 'पायल' प्रवेशांक तक ही सीमित रह गया। सूचना एवं

Citation: डॉ. राजेश कुमार सेठिया, दीपक कुमार सेठिया(2021). "हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता और शानी", Asian Mirror– December 2021, 8(4):33-40. doi - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

Asian Mirror - Volume VIII, Issue IV, 30 December-2021
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 21 October 2021
DOI - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

© डॉ. राजेश कुमार सेठियाए दीपक कुमार सेठिया

प्रकाशन संचालनालय की नौकरी के दौरान शानी 'म.प. संदेश' पाक्षिक के सहसंपादक भी थे। भाषा विभाग में संपादक के पद पर भी रहे। नवभारत टाइम्स में लगभग डेढ़ वर्षो तक, 'रवि वार्ता' के संपादक भी रहे।

लेकिन साहित्यक जगत में शानी के संपादन का महत्व 'साक्षात्कार' (प्रारंभ में त्रैमासिक अब मासिक) 'समकालीन भारतीय साहित्य' (पहले त्रैमासिक, अब द्विमासिक) तथा ऐतिहासिक 'कहानी' पत्रिका के संपादन में ऐतिहासिक कमाल को लेकर है, जो लगभग बीस वर्षो की कालावधि में फैला हुआ है। इनमें से साक्षात्कार तथा 'समकालीन भारतीय साहित्य' के शानी संस्थापक संपादक थे।

जब शानी 'म.प्र. शासन साहित्य परिषद' के सचिव हुए उन्होंने अपने संपादन में त्रैमासिक साक्षात्कार को जन्म दिया। सितंबर, 1976 ई से मार्च, 1978 ई. तक कुल सात अंको का संपादन शानी ने किया। यह पत्रिका अब मासिक होकर स्तरीय ढ़ंग से प्रकाशित हो रही है। इसी तरह 'समकालीन', भारतीय साहित्य के प्रथम अंक (जुलाई–सितंबर,1980 ई.) से लेकर 44वे अंक (अप्रैल–जून, 1991 ई) तक का संपादन शानी ने किया।[3]

इनमें से 'साक्षात्कार' समकालीन हिंदी साहित्य का आईना थी, तो भारतीय साहित्य की समकालीनता को 'समकालीन भारतीय साहित्य' के माध्यम से जाना जा सकता था। साक्षात्कार के माध्यम से शानी तत्कालीन शून्यता भरे परिदृश्य में एकरसता, एवं रचानात्मक उदासीनता को दूर सही आरै सार्थक रचनाओं का एक मंच प्रस्तुत करना चाहते थे।[4]

समकालीन भारतीय साहित्य के बारे में वे कहते है– "यह हिन्दी की सिर्फ एक पत्रिका नहीं है बल्कि भाषाओं के जरिये एक इमारत गढ़ने के सपने की बुनियाद है"।[5]

शानी अधिक संख्या में पत्रिकाओं के संपादन के लिए नहीं, अपनी गहरी सूझबूझ, उदार, दृष्टि, साहित्य हिताचिंतन की आकांक्षा से पूर्ण अपने संपादन कौशल के लिए जाने जाते हैं, जिसके चलते उन्होंने मानक स्थापित किए। कवि–आलोचना अशोक बाजपेयी के शब्दों में, – 'हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता में शानी का अवदान अमूल्यवान है और सन् 70 के बाद सबसे महत्वपूर्ण और भरोसेमंद संपादको में गिना जाता है।[6]

Citation: डॉ. राजेश कुमार सेठिया, दीपक कुमार सेठिया(2021). "हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता और शानी", Asian Mirror– December 2021, 8(4):33-40. doi - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

Asian Mirror - Volume VIII, Issue IV, 30 December-2021
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 21 October 2021
DOI - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

© डॉ. राजेश कुमार सेठियाए दीपक कुमार सेठिया

शानी के लिए सम्पादन दोस्ती का हिस्सा थी।[7] जिसके माध्यम से उन्होंने अनेक साहित्यकारों को खोजा और पेश किया।

शानी महान संपादक भैरवप्रसाद गुप्त के संपादकीय सरोकारों, आदेर्शों और उनकी गहरी सूझबूझ तथा निष्ठा से प्रमावित थे।[8] शानी की मूल चिंता साहित्य के बचाव को लेकर थी। अपनी निजी खुंदक निकालने तथा मित्रता या विरोध के लिए उन्होने पत्रिकाओं का इस्तेमाल नही किया, न ही किसी प्रकार की गुटबाजी को प्रश्रय दिया। न उन्हें प्रसिद्ध तथा बड़े नामों एवं मित्र साहित्यकारों की चिंता थी, न साहित्य की बिसात पर अपनी गोटी फिट करने का प्रतिस्पर्धा भाव, उनमें था। वे अपनी पत्रिकाओं को बड़ बोली और दलगत साहित्यिक राजनीति से बचाव के पक्षधर थे।[9] साहित्य में राजनीतिक दखलअंदाजी के विरोध की यह प्रवृति उनके संपादन में झलकती हैं। वे निस्पृह, निष्पक्ष भाव से रचनाएँ स्वीकार या अस्वीकार किया करते थे। उनमें संपादकीय जिम्मेदारी थी। अपने द्वारा संपादित रचनाओं के पक्ष में बहस हेतु वे हमेशा तैयार रहते थे। रचनाओं में आवश्यक परिवर्तन के सुझाव भी वे देते थे। उनमें संपादकीय अहम्नयता न होकर साथी लेखक की आत्मीयता होती थी।[10]

एक अच्छा लेखक ही एक श्रेष्ठ संपादन हो सकता है, क्योंकि उसे साहित्य की गहरी समझ होती है। उसमे यह सूक्ष्मदृष्टि होती है कि कहाँ जीवन –दृष्टि या कलाबोध बुनियादी सच पर हावी होकर उसे विकृत या सरलीकृत करती है। इस दृष्टि से शानी साहित्यक घपले के प्रति सजग रहते थे। अपनी इसी सजगता के कारण वे अपनी पत्रिकाओं को विचारधारात्मक संघर्षो के आँच और खरोचों से बखूबी बचा सके। उन्होंने सारे देश में अनेक नये लेखकों, कवियों, कहानीकारों को मंच प्रदान किया और उनकी प्रतिभा–परिष्कार में मदद भी की। इससे नये पुराने लेखक उनसे जुड़ते चले गये।

शानी ने पत्रिकाओं का संपादन बहुत ही उच्च–मानदण्डो के साथ किया उन्होंने कभी भी अपनी रचनाओं को पत्रिकाओं में स्थान नहीं दिया तथा उन पर कभी चर्चा नहीं की। अपने मित्रों तथा आत्मीय जनों की रचनाओं को भी योग्य होने पर ही जगह दी, चाहे वह धनंजय वर्मा जैसे उनके घनिष्ठ मित्र हो या गुरु लाला जगदलपुरी।

Citation: डॉ. राजेश कुमार सेठिया, दीपक कुमार सेठिया(2021). "हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता और शानी", Asian Mirror– December 2021, 8(4):33-40. doi - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

Asian Mirror - Volume VIII, Issue IV, 30 December-2021
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 21 October 2021
DOI - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

© डॉ. राजेश कुमार सेठियाए दीपक कुमार सेठिया

एक संपादक के रुप में तथा साहित्य अकादमी की मंशा के अनुरुप 'समकालीन भारतीय साहित्य' में उन्होंने भारत की सभी प्रमुख 22 भाषाओं को समान महत्व दिया तथा समय–समय पर भाषा–विशेष पर केद्रित अंक भी निकाले। उनके संपादन में करीब 18 भाषाओं पर केंद्रित अंक या विशेषांक निकले। किसी भाषा या रचना के साथ उन्होंने भेद नहीं किया, लेकिन स्तरीय रचनाएँ ही स्वीकृत की, भले ही विशेषकों के लिए लंबी प्रतीक्षा करनी पड़ी हो। किसी लेखक या भाषा–विशेष के प्रति मोह या पूर्वाग्रह की मानसिकता से उन्होंन कार्य नहीं किया । परंपरागत विधाओं की ओर ही संपादक (शानी) का ध्यान नही था, बल्कि उपेक्षित विधाओं की ओर भी दृष्टि गई। रचनाओं के साथ शानी खुद बहुत मेहनत करते थे और दूसरी भाषा से अनुदति रचनाओं को भाषा की प्रकृति के अनुरुप ढालते थे।[11]

श्रीपत राय तथा भैरवप्रसाद गुप्त के संपादन में निकलने वाली ऐतिहासिक पत्रिका 'कहानी' जब दुबारा प्रारंभ हुई, तो शानी को उसका संपादकीय भार सौंपा गया। शानी ने 'कहानी' को उसके मूल रुप में ही संपादन का बीड़ा भी उठाया। लेकिन अपनी अस्वस्थता तथा व्यवस्थापकों से न जमने के कारण उन्होंने मार्च, 1994 ई. का प्रथम अंक ही (कहानी) संपादित किया। यह अंक साहित्य जगत में एक जबरदस्त हस्तक्षेप की तरह था। 'किताबों में छिपे लोग' शीर्षक से उन्होंने अपने संपादकीय में शाश्वत–सत्य का प्रतिपादन किया– "क्या करती हैं कहानियाँ ? कहानियाँ क्रांति नही करती, लेकिन हमारे अंतस पर ओस की तरह धीरे–धीरे पड़ती हुई देर तक और बहुत दूर तक हमारा पीछा करती रहती हैं – ऐसे कि हम सहज ही बदल जाते हैं। इतने चुपचाप कि हमें अहसास भी नहीं होता।[12]

शानी की जागरुक संपादकीय दृष्टि–समकालीन साहित्यिक समस्याओं, जड़ता और साहित्यिक चिंताओं पर भी जाती हैं। वे इन समस्याओं, मुद्दों, ओर चिंताओं के माध्यम से साहित्यिक हस्तक्षेप भी करते हैं– "रचनात्मक उदासीनता चाहे किसी भी दबाव के तहत हो, साहित्यिक दृष्टि से ऊब ओर चिंता पैदा करती हैं। हर तथाकथित प्रगतिशील रचना मिजानन रचना नहीं होती जबकि हर सही रचना स्वाभाविक रुप से प्रगतिशील और अग्रगामी होती हैं।[13] इसी प्रकार जगदीश चंद्र के 'धरती धन न अपना' के बहाने हिन्दी समीक्षा की स्थिति का उद्घाटन करते हुए वे कहते हैं कि "हिन्दी में चर्चा नहीं होती या तो की जाती है या करायी जाती है। यह बात तकलीफदेह है कि जिन रचानाओं से अनुमव, संवेदना ओर इंनसानी कद्रों के लिहाज से हम समृद्ध होते है जिनसे हमारी इजाफत होती है, वे ही साहित्यिक परिदृश्य से गायब हैं।[14]

Citation: डॉ. राजेश कुमार सेठिया, दीपक कुमार सेठिया(2021). "हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता और शानी", Asian Mirror– December 2021, 8(4):33-40. doi - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

Asian Mirror - Volume VIII, Issue IV, 30 December-2021
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 21 October 2021
DOI - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

© डॉ. राजेश कुमार सेठियाए दीपक कुमार सेठिया

इसी तरह प्रांसगिक ओर सार्थक रचना के बारे में वे कहते हैं,–"यथार्थ को सिर्फ छू भर लेना काफी नहीं है किसी भी सार्थक ओर प्रांसगिक रचना में जरूरत इस बात की भी है कि अपने समय के यथार्थ की शिनाख्त करती हुई वह यह संकेत दे सके कि वर्तमान सामाजिक परिवेश में एक आदमी जो करता है, वह क्यों करता है, नहीं करता तो क्यों नहीं – और क्यों नहीं चुपचाप गुजर जाता, यह कहकर कि सब कुछ जहन्नुम में जाय।[15]

भाषा पर उनकी टिप्पणी देखिए... – "भाषा एक नदी की तरह गहरी या उथली होती है, तमाम तरह के रंग ओर जोखिमों से भरी हुई – उसके भी तट होते हैं और उस पार पहुंचे बिना अर्थ या सोच की दृष्टि से निस्तार संभव नहीं है ।[16]

साहित्य के जन्म के बारे में वे कहते हैं ,"यातना और सपने दोनों के रहने की जगह एक ही है, उस जगह का नाम आप कुछ भी दे ले – ध्यान देने की बात यह है कि ये दोनो साथ रहते हैं – जुड़वाँ भाइयों या बहनों की तरह। कभी ये अलग दिखाई देते हैं – कभी एक और कभी इतने गड्ड––मड्ड कि उनकी अपनी और निजी पहचान ही खो जाती हैं । यही वह जगह है, जहाँ से साहित्य का चमकीला सोता फूटता है, अपनी ही जड़ों को सींचने के लिए।[17]

उपन्यास की मृत्यु जैसी साहित्यिक –चर्चाओं की निरर्थकता को इंगित करते हुए वे कहते हैं –"कवि –संवेदना लेकर उपन्यास के पास जाना या उपन्यास में कविता ढूँढना साहित्यक अन्याय ही नहीं, उस आदमी का भी अपमान है, जो अपने समय के चौतरफा सवाला से सुलग रहा है, और जिसकी विश्वसनीय गवाही सिर्फ हमारे समय का उपन्यास ही दे सकता है – यह इसलिए भी कि अक्सर 'कवि–संवेदना' वास्तविकता को धकिया कर यथार्थ को धुंधला और रूमानी बना देती हैं। पश्चिम हो या भारतीय दुनिया में उपन्यास अगर आज भी जीवंत, जनप्रिय और सच को उसकी पूरी संश्लिष्टता और विडंबनाओं के साथ समेटने की अपार संभावनाओं वाली सबसे सार्थक और जीवंत विधा है तो सिर्फ इसलिए कि उसकी जड़े अपने समय के निर्मम यथार्थ में हैं।[18]

शानी रचनाओं पर सार्थक टिप्पणी करके उसकी तह तक पहुँचते हैं और पाठक को रसास्वादन के लिए प्रेरित करते हैं। भारतीय तथा विदेशी रचनाओं में संवेंदना साम्य का उद्घाटन भी वे करते हैं। समकालीन

Citation: डॉ. राजेश कुमार सेठिया, दीपक कुमार सेठिया(2021). "हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता और शानी", Asian Mirror– December 2021, 8(4):33-40. doi - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

Asian Mirror - Volume VIII, Issue IV, 30 December-2021
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 21 October 2021
DOI - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

© डॉ. राजेश कुमार सेठियाए दीपक कुमार सेठिया

तथा दिवंगत रचनाकारों के महत्व तथा रचनाकर्म पर भी समीचीन टिप्पणी करते हुए, उनके योगदान को रेखांकित करते है। शानी रचना की तह में जाने की सूक्ष्म दृष्टि पाठक वर्ग को प्रदान करते हुए कहते हैं – "हर अच्छी कविता के भीतर कंगारू के पेट की तरह एक और कविता छुपी होती है, तिलिस्म की तरह – जो अपने आप में अलग और पुरे व्यक्तित्व के साथ धड़क रही होती है, अगर हम उसे देखना चाहें तो"।[19]

इसी प्रकार कहानी के महत्व तथा उपादेयता का उद्घाटन करते हुए शानी कहते हैं– "कहानियाँ निश्चय ही उन मिथका को मिस्मार करती है, जिन्हें समाज ने अपनी सुरक्षा के लिए अपने गिर्द गढ़ रखे होते हैं। ये उन प्राचीरों और दुर्गों पर हमलावर होती हुई तहस–नहस करती हैं जिनमें छिपकर हम लगातार हताहत होते रहते है, लेकिन आत्म –समर्पण हुए डरते है– यह समझते हुए कि हम हिफाजत से हैं"।[20]

शानी के मित्र तथा ख्यात आलोचक डॉ. धनंजय वर्मा ने शानी के संपादन को उनकी रचनात्मक उपलब्धि मानने पर प्रश्नांकित करते हुए उनकी रचनाशीलता के ह्रास की बात उठायी है,[21] लेकिन शानी स्वंय इससे इंनकार करते हैं, "मैं नहीं समझता कि आपकी रचनाशीलता का ह्रास होता हैं। आपकी रचनाशीलता आपका अपना एक अलग पहलू है, जिसमें अनेक प्रकाशित अप्रकाशित रचनाओं के बीच से गुजरते हुए आप रचनात्मक दृष्टि से समृद्ध होते हैं।[22] निःसंदेह शानी का संपादन उच्च कोटि का था और इसे उनकी बड़ी रचनात्मक उपलब्धियों में सम्मिलित किया जा सकता है।

क्या आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, भैरवप्रसाद गुप्त, प्रकाश जैन, धर्मवीर भारती के संपादन कौशल, सूझबुझ, संपादकीय –आदर्शों को उनकी रचनात्मकता से पृथक किया जा सकता हैं ?..... नहीं, इसी तरह शानी के संपादन कौशल को भी उनकी रचनात्मकता से पृथक नहीं किया जा सकता। यह भी सत्य है कि, इससे उनका लेखन–कर्म थम सा गया, यह दायित्व का तकाजा भी था। जिस दौरान हिंदी में अच्छी साहित्यिक पत्रिकाओं का अकाल था, अनेक साहित्यिक पत्रिकाएँ जैसे 'लहर', 'ज्ञानोदय', 'धर्मयुग', 'चाँद', 'माधुरी', 'सरस्वती', 'हंस' आदि मर चुकी थी या मर रही थी उसी दौर में, शानी ने अपने ऐतिहासिक संपादन से 'साक्षात्कार', 'समकालीन भारतीय साहित्य' तथा 'कहानी' को हिंदी जगत में रखा। उनके इसी सुदृढ़ बुनियाद पर आज 'साक्षात्कार' तथा 'समकालीन भारतीय साहित्य' मासिक, एवं द्विमासिक रूप से प्रकाशित हो रही हैं– उच्च साहित्यिक मापदण्डों के साथ।

Citation: डॉ. राजेश कुमार सेठिया, दीपक कुमार सेठिया(2021). "हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता और शानी", Asian Mirror– December 2021, 8(4):33-40. doi - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

Asian Mirror - Volume VIII, Issue IV, 30 December-2021
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 21 October 2021
DOI - 10.21276/am.2021.8.4.AN4

© डॉ. राजेश कुमार सेठियाए दीपक कुमार सेठिया

संदर्भ

1 शानी का पत्र श्री लाला जगदलपुरी के नाम दिनांक 14.12.1951
2 श्री लाला जगदलपुरी तथा शानी के मित्रों से प्राप्त जानकारी।
3 समकालीन भारतीय साहित्य
4 'सक्षात्कार' अंक – 1, सितंबर, 1976 – पृ. 3।
5 'समकालीन भारतीय साहित्य' अंक 1 –,जुलाई–सिंतबर 1980 – पृ. 8
6 शानी : आदमी और अदीब – सं. डॉ. प्रसाद शर्मा – पृ. 28
7 ——————————वही ——————————— पृ. 28
8 'समकालीन भारतीय साहित्य' जुलाई – सिंतबंर, 1990 पृ. 190
9 यह जो आईना है – मधुरेश –पृ. 167
10 शानी : आदमी और अदीब – सं. डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा – पृ. 35
11 सब एक जगह – 2 – शानी – पृ. 11
12 कहानी, मार्च 1995 – बकलम खुद – किताबों में छिपे लोग – शानी
13 साक्षात्कार अंक – 1, सितंबर, 1976 – पृ. 4
14 साक्षात्कार अंक – 2, दिसंबर, 1976 – पृ. 6
15 साक्षात्कार अंक – 3, मार्च 1977 – पृ. 10
16 'समकालीन भारतीय साहित्य' अक्टूबर –दिसंबर 1980 – पृ. 8
17 'समकालीन भारतीय साहित्य' जुलाई – सिंतबर, 1983
18 'समकालीन भारतीय साहित्य' जनवरी–मार्च 1985 – पृ. 7
19 'समकालीन भारतीय साहित्य' अंक – 44 अप्रैल–जून 1991 – पृ. 7
20 'कहानी', मार्च 1995 – बकलम खुद – किताबों में छिपे लोग – शानी
21 'साक्षात्कार' मई –जून, 1996 – पृ. 91
22 'सारिका' – अंक 279 – 16 से 28 फरवरी, 1987 – पृ. 17

Citation: डॉ. राजेश कुमार सेठिया, दीपक कुमार सेठिया(2021). "हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता और शानी", Asian Mirror– December 2021, 8(4):33-40. doi - 10.21276/am.2021.8.4.AN4